7. **निर्देशक (—)—** जब व्याख्या आदि स्पष्ट करनी हो, उदाहरण देते समय, संवादों में नाम के बाद (—) का प्रयोग किया जाता है।

8. **अवतरण या उद्धरण चिह्न (" "/ ' ')—** किसी के कहे हुए वाक्यों को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाए तो उसे दुहरे उद्धरण चिह्न (" ") के बीच लिखा जाता है। किसी व्यक्ति के नाम या उपनाम आदि के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न (' ') का प्रयोग किया जाता है।

9. **विवरण चिह्न (:-)—** सूचना, निर्देश आदि देने के लिए विवरण चिह्न (:-) का प्रयोग किया जाता है।

10. **कोष्ठक ( ) [ ] { }—** कठिन शब्द को स्पष्ट करने के लिए या गणित में ये तीन प्रकार के कोष्ठक चिह्न प्रयुक्त होते हैं।

11. **हंसपद (‸)—** इसे त्रुटिपूरक भी कहा जाता है, क्योंकि कोई अंश छूट जाए तो इसे बीच में ऊपर करके लिखा जाता है। स्थान न होने के कारण (‸) से निर्दिष्ट किया जाता है।

बोध प्रश्न

- विराम चिह्न कौन-कौन से हैं?

12. **संक्षेपसूचक (.)—** किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए संक्षेपसूचक (.) का प्रयोग किया जाता है। डॉ., कृ. पृ. प. आदि।

हमने सीखा

❖ किसी भी भाषा को बोलते, पढ़ते या लिखते समय भावों को स्पष्ट करने के लिए वाक्यों के बीच या अंत में थोड़ा रुकना होता है। इस रुकावट का संकेत देने वाले लिखित चिह्न विराम-चिह्न कहलाते हैं—

❖ विराम चिह्न कई प्रकार के हैं—

• पूर्ण विराम (Full Stop)	(।)
• अर्ध विराम (Semi Colon)	(;)
• अल्प विराम (Comma)	(,)
• प्रश्नवाचक चिह्न (Question Mark)	(?)
• विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Exclamation)	(!)
• योजक या विभाजक (Hyphen)	(-)
• निर्देशक (Dash)	(—)
• उद्धरण चिह्न (Inverted Commas)	(" ")
• विवरण चिह्न (Colon Dash)	(:-)
• कोष्ठक (Bracket)	( ) { } [ ]
• हंसपद (Caret)	(‸)
• संक्षेपसूचक (Sign of Abbreviation)	(.)

अर्थ – बोलने का तरीका

वाच्य Voice

* सुधा पुस्तक पढ़ती है।
* सुधा से पुस्तक पढ़ी जाती है।
* सुधा के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

इन वाक्यों को पढ़ने से पता लगता है कि पहला वाक्य में कर्ता यानी सुधा प्रधान है, दूसरे वाक्य पुस्तक यानी कर्म प्रधान है और तीसरे वाक्य में पढ़ना यानी भाव प्रधान है।

तात्पर्य यह हुआ कि **जब कर्ता जो-कुछ करता है, उसके कर्तृत्व को प्रधानता दी जाती है, तब कर्तृवाच्य होता है और वाच्य में कर्ता के कर्तृत्व को दबाकर कर्म उभारने का प्रयास होता है। ऐसी स्थिति में कभी-कभी कर्ता का लोप भी कर दिया जाता है।**

बोध प्रश्न
- वाच्य से आप क्या समझते हैं?
- वाच्य के कितने भेद हैं?

इस आधार पर वाच्य दो प्रकार के होते हैं—

वाच्य
1. कर्तृवाच्य
2. अकर्तृवाच्य

1. **कर्तृवाच्य**— कर्तृवाच्य में मुख्य बिंदु कर्ता रहता है। इसमें क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रकार की होती हैं; जैसे—
   * माली पौधे लगाता है।
   * बच्चा दौड़ता है।
2. **अकर्तृवाच्य**— इसमें कर्ता गौण हो जाता है। इसमें सकर्मक/अकर्मक क्रिया वाले वाक्यों के आधार पर इसके दो भेद किए जा सकते हैं— **i.** कर्मवाच्य **ii.** भाववाच्य

i. **कर्मवाच्य**— इसमें क्रिया सकर्मक ही होती है, अकर्मक नहीं।
   * बच्चे के द्वारा केला खाया जाता है।
   * धोबी द्वारा कपड़े धुलते हैं।
   * दवाई दे दी गई है।
   * पुस्तक मेरे द्वारा पढ़ी गई।

यह भी जानें...

कर्मवाच्य के प्रयोग स्थल—
* जहाँ कर्ता अज्ञात हो। (सूचना दी गई।)
* जहाँ कर्ता को प्रकट न करना हो। (आरोपियों को पकड़ा जा रहा है।)
* कर्ता स्वयं को बचाने का प्रयास करे। (गिलास टूट गया।)
* जहाँ कर्ता निश्चित नहीं है। (अपराधी को पकड़ लिया गया।)
* अशक्तता सूचित करने के लिए। (अब और फल नहीं खाए जाते।)